

### चिरस्मरणीय मधुर संस्मरण: आभा मानव मन्दिर-वृद्ध सेवा आश्रमः

जब मैं मेरठ की स्वस्थप्रद जलवायु में निवास कर रहा था तब मुझको चिन्मय मिशन के द्वारा आयोजित प्रवचन सुनने पर मेरे इस बोध को बल मिला कि यह भौतिक जीवन नश्वर, निस्सार, और निरर्थक और आध्यात्मिक जीवन अनश्वर, यथार्थ और सत्य है, साथ ही भगवान बुद्ध का "मध्य मार्ग" और भगवान कृष्ण का गीता में उपदेशित "कर्मयोग" लाभप्रद लगा, तभी आभा मानव मन्दिर के बारे में सुना और पढा. यह भी ज्ञात हुआ कि किन्हीं सुरेश चन्द गोविल ने अपने इस प्रकार के स्वप्न को दर्शनीय साकार रूप दिया है. उन्होंने इसको नाम दिया है: "आभा मानव मन्दिर-वृद्ध सेवा आश्रम". यह उन वृद्ध नर-नारियों के लिये है जिनका जीवन या तो त्रस्त है, या वे जो नीरस जीवन व्यतीत करते हैं, या सामाजिक जीवन में उपेक्षित हैं, निराश्रित है या जो शेष जीवन चिन्तन में व्यतीत करने के लिये शांत, नीरव, एकांकी वातावरण चाहते हैं. श्री गोविल जी ने इस ओर कदम बढ़ाया जो इन आवश्यकताओं को पूरा करता है.

मैंने अक्टूबर माह में एक माह के लिये आश्रम में प्रवास करने का विचार बनाया और कहीं यह आश्रम भी दूसरे आश्रमों की भाँति आडम्बर और पाखण्ड तो भरा नहीं है जहाँ व्यक्ति को निराशा ही हाथ लगती है, मैंने इस आश्रम को बिल्कुल भिन्न पाया. मैं वहाँ गया और उसके भव्य निर्माण से आकर्षित हुआ. वहाँ सेवा भाव गुँजरित हो रहा था. प्रवेश करते ही प्रवेश द्वार के रक्षक से लेकर आश्रम के भीतर कर्मचारियों तक-कार्यालय, भवनों के सेवक, आश्रम का सौन्दर्यकरण करने वाले और शोभा बढ़ाने वाले वाले माली और प्रशासन प्रबन्धक -सेवारत पाया. उनका सेवा भाव वार्ता से ही नहीं, उनकी कार्य विधि से स्पष्ट झलकता था. गोविल साहब का सेवा भाव इन कर्मचारियों में अवतरित हुआ है. सब सेवक सेवाभाव से ओत-प्रोत थे. अन्य लोगों से ज्ञात हुआ कि श्री गोविल उन महापुरुषों में है जो हर युग में जन्म लेते हैं और अपने निस्वार्थ सेवा कार्यों द्वारा लोकहित करते हैं. ऐसे पुरुषों से पीडियाँ उत्साहित होती हैं, प्रेरणा लेती हैं और हमारी स्मृति में सदा रहते हैं, उनके सेवा भाव, विचार हमारे हृदय में गुँजरित होते रहते हैं.

**"ईश्वर की सच्ची सेवा सृष्टि के जीवों के प्रति कल्याण भावना और तदनुसार समर्पण की भावना से निस्वार्थ कार्य करने में है".**

इस सेवा भावना और विचार से प्रेरित होकर गोविल साहब में सेवा भाव अंकुरित हुआ और साकार रूप देने के लिये एक अनूठा प्रयास प्रारम्भ हो गया. इसने मूर्ति रूप लिया, "आभा मानव मन्दिर-वृद्ध सेवा आश्रम" के रूप में. इस आश्रम का भव्य निर्माण चार चरणों में पूरा हुआ. पहले चरण में गोविल

साहब ने मवाना रोड पर कसेरु बक्सर के निकट पंचवटी में क्षेत्र का चयन किया और 4200 गज भूमि का क्रय किया। दूसरे चरण में आश्रम निर्माण की योजना और डिजाइन तैयार की गई अन्तःवासियों के लिये आवास बनाने के लिये उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये स्नान गृह लॉन्ड्री भवन, भोजनालय और भोजन कक्ष, मनोरंजन के लिये और आवश्यकताओं के लिये भवन, वात्सल्य भवन, पूजा भवन और उनके स्वास्थ्य निरीक्षण के लिये व्यवस्था भवन का विशेष ध्यान रखा गया। तीसरे चरण में इन भवनों में आवश्यक यन्त्र और उनकी सुख सुविधाओं के लिये उपकरणों की व्यवस्था की। डॉक्टरी भवन में स्वास्थ्य निरीक्षण के लिये उपकरणों की सुविधाएँ दी। भोजनालय में भोजन पकाने के लिये आधुनिक प्रकार के बर्तन फ्रीज, अलमारी, और अन्तःवासियों के लिये भोजन कक्ष और उसमें आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की., सार्वजनिक भवन (लिविंग रुम) में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना जाग्रत रहे, इसके लिये पत्र-पत्रिकाओं, टी0 वी0 सेट, मनोरंजन के लिये विभिन्न खेलों का प्रबन्ध किया गया। वात्सल्य भवन के लिये आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की। पूजा भवन में ऊँचा स्थान बनाया है और सजाने के लिये प्रसिद्ध देवों, महापुरुषों के चित्र लगावाये, बैठने के लिये कुर्सी और फर्श के लिये गद्दे, चादर की व्यवस्था की . अन्तःवासियों के लिये निर्मित भवनों में अलमारी और उसमें हैंगर,तिजोरी की व्यवस्था, मेज पर टेलीफोन, घड़ी, थर्मस और ग्लास की व्यवस्था, कपाटों और खिडकियों के लिये पर्दों की व्यवस्था, बिस्तर के लिये फोम के मोटे गद्दे, चादर, कम्बल, रजाई, तकिया कुर्सी और कागज के टुकड़ों के लिये बाल्टी है। गोविल साहब का ध्यान मानसिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास पर भी गया है। उसके लिये आध्यात्मिक पत्रिकाएँ सार्वजनिक भवन में उपलब्ध हैं। प्रत्येक आवास भवन में लगे हुए ध्वनि विस्तारक यंत्र द्वारा प्रातः और संध्या को भजन, धार्मिक गीत-गाने आते हैं। पूजा भवन में पूजा होती है, समय-समय पर कीर्तन और प्रवचनों का प्रबन्ध है। विशेष प्रवचनों का भी आयोजन होता है। ऐसा ही एक आयोजन कलकत्ता से आये चिन्मय मिशन के स्वामी अद्वैतानंद जी के आश्रम आने पर हुआ। सब अन्तःवासियों ने उनके दर्शन कर और सुनकर अपने को धन्य समझा। स्वामी जी ने अन्तःवासियों के साथ अपरान्ह को भोजन किया। परहित में लगे संस्थापक गोविल साहब को आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार और प्रचार के लिये धन्यवाद दिया। और गोविल साहब को यह कहकर उत्साहित किया, सरहना की कि इस प्रकार के शुभ कार्यों में लगे वे विशेष व्यक्ति हैं। ईश्वर उनको शक्ति प्रदान करे। श्रीमति आभा गोविल भी समय-समय पर अपनी धार्मिक भावना के वशीभूत होकर और अन्तःवासियों की धार्मिक और आध्यात्मिक भावना जाग्रत करने और वृद्धि के लिये हवन और कीर्तन का आयोजन करती हैं। वे समय-समय पर महिला, अन्तःवासियों के स्वास्थ्य और कुशल क्षेम के बारे में पूछती रहती हैं। चौथे चरण में गोविल साहब को अपने लक्ष्य को पूर्ण रूप देने के लिये

कुशल और समर्पित सेवकों की आवश्यकता हुई. उनमें ऐसे दो कर्मचारियों (सेवकों) का नाम उल्लेख करना आवश्यक है. पहले है श्री एल० के० सूद, आश्रम के प्रबन्धक, जो गोविल साहब को वांछित सहायता और सहयोग देते हैं. वे अपनी पैनी दृष्टि, कुशाग्र बुद्धि, कार्य करने की विशेष क्षमता और उदार स्वभाव का आश्रम के प्रबन्धन में प्रयोग करते हैं. दूसरी हैं निधि गुप्ता, जनसम्पर्क अधिकारी, जो वृद्धों में अपनत्व की भावना जगे व परस्पर पारिवारिक सम्बन्ध अनुभव करें अपनी शक्ति को विभिन्न खेलों के द्वारा जो वे वृद्धों के साथ खेलती हैं, खिलाती हैं और निर्देशित करती हैं, पूर्ण समर्पित भाव से प्रयोग में लाती है.

वृद्धों की सुख सुविधाओं के लिये हर समय पंखों के लिये, प्रकाश के लिये, कूलर के लिये, गर्म पानी के लिये इन्वर्टर, जनरेटर और सोलर हीटर लगे हुए हैं. इस प्रकार गोविल साहब आश्रम का प्रबन्धन कुशलता पूर्वक करते हैं. अन्तःवासी इन सुविधाओं का आनन्द उठाते हैं और अनुग्रह भावना प्रकट करते हैं और मन ही मन गोविल साहब की दीर्घायु की कामना करते हैं.

इन स्वर्गीय सुख-सुविधाओं का उपभोग करके और इन्द्रपुरी जैसे वातावरण में रहकर मैंने जब एक माह पश्चात इस अनूठे और अनुपम आश्रम को छोड़ा और गृह की ओर प्रयाण किया तो शरीर तो चला, परन्तु मन वहीं अटका रह गया. वहाँ के अन्तःवासियों का प्रेम और सौहार्द भूले नहीं भूलता. उनका स्नेहसिक्त व्यवहार मेरे हृदय पर अंकित हो गया है. उनकी मधुर स्मृति मेरे घबराहट के क्षणों में सम्बल है; इसलिए वे विस्मृत नहीं होते. वहाँ का परिवार जैसा वातावरण मेरी अमूल्य निधि है.

डॉ० पी०पी०एस० चौहान  
(अवकाश प्राप्त प्रोफेसर / प्रिन्सीपल)  
32, मानसरोवर कॉलोनी  
गली न०-7  
फोन. न०-2666639.

*P.S. Chauhan*  
(डॉ० पी०पी०एस० चौहान)  
एक अन्तःवासी साधक